ओ३म्

अष्टाध्यायी-प्रकाशिका

172.

[अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य के अध्ययन से ही संस्कृत व्याकरण का साङ्गोपाङ्ग ज्ञान हो सकता है, इस वाक्य को चरितार्थ करानेवाली तथा बिना रटे ६ मास में व्याकरण का ज्ञान करानेवाली एकमात्र पुस्तक अष्टाध्यायी-प्रकाशिका ।]

लेखक :

प्रोफेसर देवप्रकाश पातञ्जलः शास्त्री, एम. ए.

व्याकरणाचार्यः निरुक्ताचार्यः